उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई ....

उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है, वो खोवत है, जो जागत है सो पावत है।।
उठ जाग ....

टुक नींद से अखियाँ खोल जरा, और अपने प्रभु का ध्यान लगा।
ये प्रीत करन की रीत नहीं, प्रभु जागत है तू सोवत है।।
उठ जाग ....

नादान भुगत करनी अपनी, ओ पापी पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी सिर पे धरी, फिर शीश पकड़ क्यों रोवत है।।
उठ जाग ....

जो कल करना वो आज करले, जो आज करना वो अब कर ले।
जब चिड़ियों ने खेत ही चुग डाला, फिर पछताये क्या होवत है।।
उठ जाग ....

आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बँधे जंजीर।।